

# Readers' Club Bulletin

पाठक मंच बुलेटिन

Vol. 19, No. 1, January 2014





## Readers' Club Bulletin

### पाठक मंच बुलेटिन

Vol. 19, No. 1, January 2014

वर्ष 19, अंक 1, जनवरी 2014

**Editor / संपादक**

**Manas Ranjan Mahapatra**

मानस रंजन महापात्र

**Assistant Editors / सहायक संपादकगण**

**Deepak Kumar Gupta**

दीपक कुमार गुप्ता

**Surekha Sachdeva**

सुरेखा सचदेव

**Production Officer / उत्पादन अधिकारी**

**Narender Kumar**

नरेन्द्र कुमार

**Illustrator / चित्रकार**

**Arup Kumar Gupta**

अरुप कुमार गुप्ता

Printed and published by Mr. Satish Kumar, Joint Director (Production), National Book Trust, India, Nehru Bhawan 5, Institutional Area, Phase-II, Vasant Kunj, New Delhi-110070

Printed at Pushpak Press Pvt. Ltd. 203-204, DSIDC Shed, Ph-I Okhla Ind. Area, New Delhi.

Typeset at Nath Graphics, 1/21, Sarvapriya Vihar, New Delhi-110016

### Contents/सूची

<i>Singapore: Gateway for asian .....</i>	1
<i>Events for Children</i>	2
सात समुंदर	डॉ. अमिताभ शंकर राय चौधरी 3
Peacock Plumes	Mayakshi Chattopadhyaya 7
आती है गोरैया	बद्री प्रसाद वर्मा 'अनजान' 11
कोट	साबिर हुसैन 12
How the Camel...	Ratna Manucha 14
एक अनोखी उपलब्धि	डॉ. बानो सरताज 18
कैलेंडर की आत्मकथा	गोपाल जी गुप्त 19
Stomping Ground...	Neera Jain 22
बड़ी बनूँ कुछ मैं भी	दिविक रमेश 26
Interesting Facts...	Surekha Sachdeva 27
नया सवेरा	जयश्री नायक/प्रीति रानी 30
कौन-सा वार था...	आइवर यूशिएल 32

**Editorial Address/ संपादकीय पता**

National Centre for Children's Literature, National Book Trust, India, Nehru Bhawan 5, Institutional Area, Phase - II, Vasant Kunj, New Delhi-110070

राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेस-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070

E-Mail (ई-मेल) : office.nbt@nic.in

Per Copy/ एक प्रति Rs. 5.00 Annual subscription/वार्षिक ग्राहकी : **Rs. 50.00**

Please send your subscription in favour of **National Book Trust, India.**

कृपया भुगतान नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया के नाम भेजें।

This Bulletin is meant for free distribution to Readers' Clubs associated with National Centre for Children's Literature.

यह बुलेटिन राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र से जुड़े पाठक मंचों को निःशुल्क वितरित किया जाता है।

## Singapore: Gateway for Asian Children's Content

An interface with Mr R Ramachandran, Executive Director, National Book Development Council of Singapore on the theme *Singapore as a Gateway for Asian Children's Content* was held at the India International Centre (IIC), New Delhi on 21 November 2013. The talk was held, keeping in view that India is the Focus Country in the Asian Festival of Children's Content (AFCC) in 2014.

AFCC is held annually in Singapore by National Book Development Council of Singapore and is one the major events in the world for promoting children's content. National Book Trust, India being the nodal body will put up a Focus Country Pavilion with a collective display of Indian children's books in the Festival and will hold various events and sessions on Indian children's literature.

Focussing on the opportunities that Singapore can provide to India for promoting Indian content across the world, Mr Ramachandran felt that Asia is hungry for content and India can feed that appetite for content. Singapore has a large Asian population and has a multi-lingual culture, excellent infrastructure, cultural sensivity, excellent library facilities and gateway to the rest of the world. He urged Indian publishers to establish their units in Singapore and reach out to the rest of the world. He further added that India and Singapore will be celebrating 50 years of



diplomatic relationship in the year 2015 and to mark this occasion both the countries should strengthen their ties through cultural, trade and other exchanges throughout the year. "The Focus Country Presentation of India in the AFCC 2014 may be a nice beginning," he added.

In his presidential address, Prof. Avadhesh Kumar Singh, Director, School of Translation Studies and Training, IGNOU emphasised on constant cultural ties with Singapore.

Mr M A Sikandar, Director, NBT while welcoming the guests appreciated Mr Ramachandran's pioneering efforts to promote reading culture among the masses. Coordinated by Dr S Majumdar, Chief Librarian, IIC and Shri M R Mahapatra, Editor, NBT, the talk was organised jointly by the National Book Trust, India and India International Centre. Several authors, publishers and book lovers took part in this event.

## Events for Children in the Chandigarh Book Fair



The Chandigarh Book Fair organised by UT Administration, Chandigarh in collaboration with the National Book Trust, India was held at the Parade Ground, Sector 17, Chandigarh from 13 to 18 November 2013. The Fair was inaugurated by Shri Shivraj V Patil, Hon'ble Governor of Punjab and Administrator, UT of Chandigarh.

Shri V K Singh, Principal Secretary, Finance and Education, UT of Chandigarh and Shri M A Sikandar, Director, NBT were also present on the occasion.

National Centre for Children's Literature, a wing of NBT organised several literary and cultural programmes for children, young adults

and general readers during the Fair. These included workshop on *Skills of Storytelling* for teachers, educators and parents, *Readers' Club Orientation* for school teachers, workshop for children on *Spin A Tale*, *Treasure Hunt* and *NBT Chandigarh Book Fair Express*, workshop on *Enactment of a Story and Dance—Drama* for children and teachers, Career Guidance for Young Adults on *Publishing as a Career*, workshop for budding authors on *Creative Writing*, Career Guidance session on *Book/Graphic Design as a Career* for young adults and *Storytelling Marathon* featuring children, teachers and young authors.

Well-known authors and scholars who conducted these events included Ms Suman Bajpayi, Dr Shekhar Sarkar, Ms Kshama Sharma, Ms Asha Shiklani and Shri Subir Roy. A large number of book lovers, students, teachers, educationists and scholars participated in these events which were coordinated by Shri Manas Ranjan Mahapatra, Editor (NBT) and Shri M L Bhatia, Asstt. Editor (NBT).

### Panel Discussion at Salumbar

National Book Trust, India and Salila Sanstha together organised a panel discussion on *Kahani Se Natak Tak* at Salumbar (Rajasthan) on 29<sup>th</sup> September, 2013. The panelists were: Shri Prayag Shukla, noted author and art critic from Delhi, Smt. Sangeeta Sethi, Shri Jaiprakash Pandya 'Jyotipunj' and Dr. Bimla Bhandari, noted children's authors from the state. Shri Manas Ranjan Mahapatra, Editor (NCCL-NBT) coordinated the event.

## सात समुंदर

टुन-टुन-सुन-सुन

डॉ. अमिताभ शंकर राय चौधरी

पिछले दो अंकों में आपने पढ़ा हासनकुट्टि को अपनी बीमारी के चलते महीने में दो बार अपने गाँव से कोचीन जाना पड़ता है। हर बार उसे बिजली की सेंक लेनी पड़ती है। लेकिन इस दफा अस्पताल में हड़ताल की वजह से वह सेंक नहीं ले पाया और उसे गाँव लौट जाना पड़ा।

नारायणन की पोती गायत्री तैराकी में फर्स्ट आई थी और निर्णायक ने नारायणन से उनकी पोती का हाथ माँगा था। इस भाग में कुछ और नई बातें...

शशिशेखर नारायणन थोड़ी देर कुमारन नयनार की ओर देखने लगे। उन्हें कुछ समझ में नहीं आया कि वह कह क्या रहा है, 'मेरी पोती!'

को। उसने भी 1975 में तीन स्वर्ण पदक जीते हैं।”

“अरे भाई, जरा आहिस्ते। तुम तो मुझे

“जी सर, गायत्री को मुझे दे दीजिए। यह हीरा है। इसे केवल तराशना है। सर, आपने सुना होगा, ऑस्ट्रेलियाई तैराक इयान थर्पे को इस बार जापान में तैराकी में तीन-तीन स्वर्ण पदक मिले हैं। कैसे? उनके पास अच्छे कोच हैं। वे ट्रेनिंग लेते हैं। आज तक ऐसा रिकॉर्ड किसी ने नहीं बनाया, सिवाय अमेरिकी तैराक टिम शॉ



तैराकी का पूरा इतिहास सुनाने लगे।”

“सर, अब तो यही मेरा पेशा भी है और नशा भी। अपने गाँव हरिपदम की एक लड़की को भी अगर तैराकी में आगे ले जा सकूँ तो मुझे बहुत बड़ी तसल्ली होगी।”

नारायणन ने पूछा, “इसकी पढ़ाई-लिखाई!”

“उसमें कोई बाधा नहीं पड़ेगी। फिर सर, माफ कीजिएगा, पंडित भीमसेन जोशी को कौन पूछने जाएगा कि उन्होंने कोई डिग्री ली है या नहीं। उन्होंने हाईस्कूल भी पास किया है या नहीं। वे तो गरीबी से लड़कर इतने बड़े गायक बने हैं। घर से भागा हुआ लड़का। आदमी को अपना हुनर आना चाहिए, बस।”

गायत्री अप्पुन का हाथ खींचने लगी।

नारायणन का भी मन डोलने लगा, “फिर इसके पिता से भी तो पूछना चाहिए!”

“इतना तो आपको करना ही होगा। आखिर मणि आप ही का बेटा है।”

दोनों घर वापस आ गए। गायत्री मन-ही-मन छटपटा रही थी—कब आतिशबाजी का नजारा देखने चलेंगे। पुरस्कार का भी उसे ख्याल नहीं रहा।

शाम की कॉफी पीकर पूरा परिवार निकल पड़ा। छोटा भाई राजन पिता जी की गोद में था। गायत्री उछल-उछलकर अपनी वेणी लहराती हुई अप्पुन के साथ चल रही थी। दादी, अम्मा और गायत्री सभी ने बालों में

सफेद बेली के फूल लगाए हुए थे। गायत्री सोच रही थी, पिछले साल गरमियों के दिन इसी तरह सभी त्रिशूर के भाड़ाक्कुनाथन शिव मंदिर का ‘विपुलपुरम’ उत्सव देखने गए थे। वहीं उसने सजे हुए हाथियों का जुलूस भी देखा था। फूलों का गहना, सिर पर जरी का पट्टा—एक-एक हाथी का कितना शृंगार किया जाता है! फिर भी इन सबमें सबसे निराला था परमेश्वरम नाम का हाथी। उसका महावत गोपी उसे अरात और उल्सावन के त्योहारों में गाँव-गाँव घुमाने ले जाता है। इन हाथियों की देखभाल के लिए पुनथुरकोटा में ‘हाथियों का किला’ है। मतलब इनका अभयारण्य। अच्छा कह रहे थे, परमेश्वरम की कहानी नेशनल जिओग्राफी चैनल पर भी दिखाई गई है। फिर रातभर वे आतिशबाजी देखते रहे। हर साल 8 मई को त्रिशूर में यह उत्सव मनाया जाता है। पैगोडा जैसा यह मंदिर मानो दक्षिण भारत का है ही नहीं। इसकी दीवारों पर महाभारत के चित्र भी बने हैं। दूर-दूर से लोग इन्हें देखने आते हैं।

कॉलेज के मैदान में लोग आतिशबाजी का आनंद उठा रहे थे। शाम ढल चुकी थी। एक-एक अनार में जब आग लगाई जाती तो लगता था रात के आकाश से उछल-उछलकर सितारे जमीन पर टपक रहे हैं। कितनी रोशनी हो रही थी! गायत्री की आँखें चमकने लगीं।

उधर, राजन अच्छा की गोद में सो गया था। मणि ने तगादा दिया, “अब घर भी

चलो। कल सुबह ऑफिस भी तो जाना है!”

गायत्री को तो जैसे यह सब छोड़कर जाने की इच्छा ही नहीं हो रही थी।

घर आकर भोजन से पहले अप्पुन ने कुमारन की बात दोहराई।

परंतु मणि इतनी आसानी से न माना, “अच्चा, आप कह क्या रहे हैं? इसकी पढ़ाई-लिखाई चौपट हो जाएगी? फिर घर- गृहस्थी का काम-काज भी कुछ सीखेगी कि सिर्फ नाचती फिरेगी?”

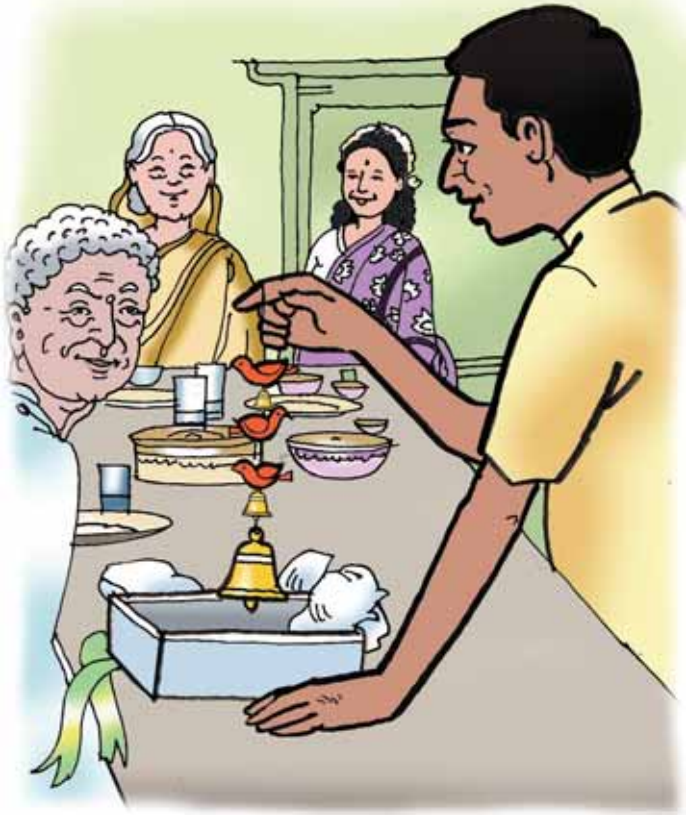
अम्मू माँ अर्थात दादी ने भी मोर्चा संभाला, “शादी-ब्याह करना है कि नहीं? आखिर लड़की जात है। इस उमर में तो हमलोग...”

“ओप्फ ओ, मणि की माँ!”

गणित के अध्यापक हेडमास्टर नारायणन ने विरोध किया— “जिंदगी में सब कुछ दो दुनी चार नहीं होता। पाँच का सपना देखना ही जीवन है। और केवल तीन मिलने पर पतवार न डाल देने का नाम ही है जीवन। मैंने तो निर्णय कर लिया है—गायत्री को स्विमिंग की ट्रेनिंग दिलानी ही है।”

अम्मू माँ भी कहाँ मैदान छोड़ने वाली थी, “अच्छा, तो रोज-रोज यह अलेप्पी जाएगी कैसे?”

“मैं जो हूँ!”



“आप? अरे आईने में कभी ठीक से अपना चेहरा भी देखा है? एक भी बाल काला नहीं रहा। हुँह!” दादी ने अपना पल्लू ठीक कर मुँह फेर लिया।

“क्या? मैं बूढ़ा हूँ!” ददा को जैसे जोश आ गया, “मालूम भी है, 108 साल का बुढ़ा कुमार आसान केरल के मार्शल आर्ट का गुरु है! सभी उसकी इज्जत करते हैं।”

मणि ने झुंझलाते हुए कहा, “अच्चा, इससे क्या लाभ होगा?”

“लाभ?” अपना चश्मा धोती से पोंछते

हुए नारायणन ने कहा, “सब्जी मंडी की तराजू की तरह जीवन क्या केवल लाभ-हानि तौलने का यंत्र मात्र है? और पी.टी. उषा के नाम से आज मेलाडि का भी नाम रोशन हुआ। कालिकट के कुटालि में जन्मी, पयोलि में पली-बढ़ी लड़की ओलंपिक में पहुँच गई।”

“कहाँ पी.टी. उषा और कहाँ गायत्री?”

इतने में अनंती ने सबके लिए खाना भी परोस दिया था। दद्दा ने चटखारे लेकर खाते-खाते कहा, “श्री रामचंद्र के सेतु बनाने में तुच्छ गिलहरी भी काम आई थी। आंध्र के पानाकुर्ति गाँव की एक मामूली गरीब धोबिन आइलम्मा ने ठान लिया कि अपनी जमीन जमींदार रेड्डी को लेने नहीं देगी। बस, उसकी इस हक की लड़ाई ने चिनगारी का काम किया और तेलंगाना किसान संघर्ष का शोला भड़क उठा।”

“अच्चा, गायत्री आखिर लड़की है। उसे किसी दिन घर-गृहस्थी संभालनी है कि नहीं?”

“आकाश छू लेने का हौसला तो बुलंद होना चाहिए। उसमें भी कंजूसी क्यों? सपना देखना बुरी बात नहीं है मणि, बशर्ते हम जिंदगी से यह शर्त न बर्दे कि हर सपना पूरा होना ही चाहिए।”

बातों-ही-बातों में बड़ों को तो ध्यान ही नहीं रहा है कि आखिर वे बच्चों के बारे में ही निर्णय ले रहे हैं। अपनी-अपनी बात मनवाने में सब इतने मगन थे कि किसी को

पता ही नहीं चला कि गायत्री कब चुपके से उठ गई और जाकर सो गई। दिनभर की थकी-हारी लड़की की आँखों में नींद का बसेरा तो रहता ही है।

अनंती को लगा, ‘देखो, किसी ने मेरी लाडली को शाबाशी भी नहीं दी। हाय रे तर्कयुद्ध!’

तभी नारायणन को ख्याल आया, “अरे, बहू गायत्री को पुरस्कार में मिला क्या है?”

“क्या मालूम अच्चा!”

“अरे देखो न! वो डिब्बा जरा लाना।”

बड़ी उमंग के साथ उन्होंने डिब्बा खोला। उसमें था एक विंड चाइम, यानी हवा-घंटी। चार छोटी-छोटी धातु की छोटी से बड़ी छड़ें लटकी हुई हैं। बीच में पाँचवीं सबसे छोटी छड़ हवा के झोंके से उनसे टकराती है तो सुरीली आवाज निकलती है—टुन-टुन-टुन...

नारायणन उछलते हुए गए और गायत्री के सिरहाने उसी रात उन्होंने उस घंटी को लटका दी।

उनकी आँखों में अपार उत्साह था।

वे एकटक अपनी पोती को देख रहे थे।

वो घंटी भी उनसे कुछ कह रही थी... टुन-टुन-सुन-सुन... सपनों को बुन!

सी-26/35-40 ए, राम कटोरा  
वाराणसी-221001 (उ.प्र.)

## Peacock Plumes

Mayakshi Chattopadhyaya

In the last issue, you read how the father of the little girl asks her to leave his house and the Mother Tree saves her from the beasts in the forest. Mother Tree also asks her to pick Peacock Plumes near the lotus pool and stitch them together to make beautiful fans. Read Next...

Day after day, the girl would go to the pool, gather a handful of lotus seeds, scatter them around the lotus pool and return with a bunch of peacock plumes. When she had gathered enough plumes, she fashioned them into a hundred fans of exquisite beauty and went with them to the edge of the forest, to sell them to the merchants.

All day she waited, with the beautiful fans arranged around her, when suddenly in the distant haze, she saw a mysterious copper-cloud floating across the solitary desert sands. Soon, a caravan of camels showed up, shrouded in a veil of desert dust. As the caravan reached the edge of the forest, the

thirsty camels went down on their knees, to drink water from a forest stream and rest their weary limbs. A dust-covered merchant came up to her and said, "Beautiful maiden! These are rare and exquisite fans that you sell! Will you exchange them for a bale of scarlet silk and necklace of turquoise and



pearls?” The girl willingly agreed and ran back to the Mother Tree.

When the Mother Tree saw the bale of scarlet silk and the turquoise and pearl necklace, she said, “Now, my child, sew yourself a gown of scarlet silk and wear the beautiful necklace of turquoise and pearls, and you will be the Queen of the forest! Then, collect many more peacock plumes and when you have gathered enough to make a thousand more fans, take them to the edge of the forest once again, and sell them to the desert merchants.”

The girl made a thousand fans, more exquisite than the ones she had made before, and took them to the edge of the forest. Soon the copper-cloud appeared and once again, the merchant ran up to her and said, “Lovely lady, I bring you good news! I have sold your fans to my King and he wishes to have a thousand more of your wondrous fans.”

But the girl looked thoughtful and, with a twinkle in her eye, replied: “Tell your King that, if he wishes to have a thousand fans, he will have to come himself to fetch them!”

“Foolish lady!” exclaimed the angry merchant, “the way is long and the journey across the desert is harsh and lonesome. Besides, no King has ever crossed the desolate desert sands!”

“Even so, your King will have to come himself, if he wishes to buy my

fans!” said the girl, as she collected the fans and ran back to the forest.

Many days went by and when it was time for the caravan to return, the girl dressed in the scarlet silken gown that she had stitched for herself, wore the necklace of turquoise and pearls, and waited at the edge of the forest, with her fans arranged around her. Once again, the copper dust cloud floated across the desert sands, but this time, it was the King himself who came!

At the first glance, the King fell deeply in love with the beautiful girl. “Beautiful one!” said the King, gazing at her with adoring eyes. “What would you like in exchange for a thousand fans?”

“I would like to be your Queen!” she bashfully replied.

“Then return with me to my kingdom across the desert and I shall marry you and you will be my Queen!” said the King.

“But, I belong to the forest and in the forest I shall remain. If you desire to marry me and make me your Queen, you will have to build a palace for me and live here in the forest with me,” she answered.

So deeply in love was the King, that he ordered his men to build a grand palace in the forest for him and his future Queen.

Hundreds of men were employed from the skirting villages and towns, the



forest was cleared, a thousand trees were felled, except for the kind Mother Tree, and a green jade palace rose up around her beloved Mother Tree, who had given the little girl shelter and love.

In the new-born joy of love, the King married the beautiful girl and gave her all his riches and precious treasures. And, as he led the Queen to the jade palace, the Mother Tree swayed with joy and scattered her choicest blossoms across the golden threshold, to bless them.

One day, many years later, as the Queen stood by her window to look out into the palace garden, she saw a ragged old man watering the plants in her rose garden. Something about his proud face and noble bearing reminded her of her father. Confused, she turned to the King who was standing beside her and said: "That ragged old man who is watering my rose garden, has a familiar face and strangely, he reminds me of my father! But, my father is a wealthy merchant and lives like a king in a majestic mansion!

Let us call him up to the palace and ask him who he is and where he belongs.”

The poor old man, not knowing why he was called, trembled in fear, as he was led up to the palace and into the King’s chamber. Humbly, he bowed to the King and as he looked up at the Queen, he recognised his daughter! With a startled sob he cried: “My child, my youngest daughter, little do you know how deeply I have regretted sending you away from my house into the forest, because of my pride of wealth and worldly possessions!”

The King looked aghast, but the Queen said: “Indeed, he is my own father and though he sent me away to the forest, I still love him as I always did before.”

Sad memories gripped the Queen’s heart and words fell like drops of ice, as she asked: “What misfortune brings you to my door, dear Father?”

For a few moments there was a sad silence, as the old man was too shocked and ashamed to speak. But, after a few breaths he answered: “My child, I have lost all my wealth and precious possessions! Ashamed of being poor and penniless, I left the city, to live in the forest and have toiled day and night to earn a few pennies.”

“Where are my beloved sisters?” asked the Queen, looking at her father through a haze of tears.

“They are married to wealthy merchants and now that I am poor and penniless, they are ashamed to own me as their father,” said the old man, in sorrow.

“Dear Father, you shall have all the wealth that you had before and even more, and you will live with me in the my palace with pride and honour!” said the Queen.

Tenderly, she put her arm around her father and as she led him to the royal guest house, the old man sighed and said, “You were right, my child—nobody lives by another’s fortune and luck, except by his own fortune and his own luck. Now, I know that all the wealth and treasures of the world can never buy love.”

*And now my story is done,  
Red is the setting sun,  
The silence of evening settles,  
On flowers that close their petals.*

*Evening shadows are creeping,  
Birds on their branches are sleeping.  
Stars appear in the skies,  
Like slowly-opening eyes.*

*The moon from her place of hiding,  
Over the night come a-gliding.  
Now that the night is deep,  
Sleep, my little one, sleep.*

(From the NBT Publication  
*The Kingdom of Blue Skies*)

# आती है गौरैया

बद्री प्रसाद वर्मा 'अनजान'

दाना खाने पानी पीने  
आती है गौरैया  
मेरे घर के आँगन को  
चहकाती है गौरैया

चीऊँ चीऊँ के मीठे गीत  
सुनाती है गौरैया  
मेरे आँगन में उतरकर  
मुस्काती है गौरैया

कभी छत पर  
कभी मुँडेर पर इठलाती है गौरैया  
फुदक-फुदककर अपना प्यार  
लुटाती है गौरैया

दिनभर घर में धमा-चौकड़ी  
मचाती है गौरैया  
रात हुई घोंसले में  
जाकर सो जाती गौरैया।



गलमंडी गोला बाजार-273408  
गोरखपुर (उ.प्र.)

# कोट

साबिर हुसैन

अब्दुल जब घर आया, वह बहुत उदास था। आज सुरेश नया कोट पहनकर आया था। पिछले साल ही उसने अब्बू से कहा था कि वह भी कोट लेगा। तब अब्बू ने कहा था कि वह जल्द ही उसे नया कोट बना देंगे। पिछले साल अम्मी ने उसे एक स्वेटर बुनकर देते हुए कहा था कि वह स्वेटर पहन ले, फिर उसके अब्बू उसके लिए कोट बना देंगे। वह स्वेटर भी अब पुराना लगने लगा है, लेकिन अब्बू ने कोट बनाकर नहीं दिया।

अब्दुल के अब्बू एक सिलाई की दुकान पर कारीगरी करते हैं। अब्दुल यह भी जानता है कि उसके अब्बू रोज बारह-तेरह घंटे काम करते हैं तब जाकर घर तथा उसकी पढ़ाई का खर्च निकल पाता है। लेकिन वह सोचता है, जब सब खर्च पूरे हो सकते हैं तो उसके लिए कोट भी बन सकता है।

“क्या बात है अब्दुल?” अम्मी ने पूछा।

“मैं कल से स्कूल नहीं जाऊँगा।” अब्दुल बोला।

“क्यों? कॉपी कम थी वह तो तुम कल ही ले आए थे!” अम्मी बोलीं।

“मुझे कोट चाहिए। मेरे सभी दोस्तों के पास कोट है और मैं यह सड़ा-सा स्वेटर पहनकर जाता हूँ। मैं तब तक स्कूल नहीं जाऊँगा जब तक मुझे कोट नहीं मिलेगा।” अब्दुल कुछ तेज स्वर में बोला।

“बेटा, तुम तो जानते ही हो हमारे पास पैसा नहीं है। तुम्हारे अब्बू कितनी मेहनत

करते हैं तब जाकर घर का खर्च और तुम्हारी और तुम्हारी बहन की पढ़ाई चल पा रही है।” अम्मी धीरे से बोलीं।

“मुझे सब मालूम है! तुम बीमार हुई थीं तो पैसा आ गया था, लेकिन मेरे कोट के लिए गरीबी है!” अब्दुल झुंझलाकर बोला।

“क्या बात है बेटे?” घर में घुसते हुए अब्बू ने पूछा। उन्होंने अब्दुल की बात सुन ली थी। आज वह दुकान से जल्दी आ गए थे।

“अब्दुल कह रहा है कि जब तक आप उसे कोट बनवाकर नहीं देंगे, वह स्कूल नहीं जाएगा।” अम्मी ने बताया।

अब्दुल चुपचाप कमरे में चला गया।

“अरे, तो इसमें क्या है! मैं कल ही अपने बेटे के लिए कोट का कपड़ा लाकर उसके लिए बढ़िया कोट बना दूँगा!” अब्बू बोले।

अब्दुल ने अब्बू की बात सुनी तो उसका मन मयूर नाच उठा। वह बहुत खुश हो गया। नाश्ता करके वह खेलने चला गया।

शाम को अब्दुल बैठा पढ़ रहा था, तभी उसका ध्यान पास के कमरे में अम्मी की आवाज की ओर चला गया—

“यह मेडल क्यों निकाल रहे हैं?” अम्मी पूछ रही थीं।

“अरे, इसका करना क्या है! इसे बेच दूँगा तो अब्दुल का कोट तो बन जाएगा!” अब्बू कह रहे थे।

अब्दुल को मालूम है अब्बू को यह फुटबॉल में मिला पदक बहुत ही प्यारा है।

उसे याद है, एक बार अब्बू बीमार पड़ गए थे और पैसे की दिक्कत थी। तब अम्मी ने कह दिया था कि यह पदक बेच दीजिए और अब्बू बहुत ज्यादा नाराज हो गए थे। अब्बू को उसने इससे पहले कभी इतने गुस्से में नहीं देखा था। उन्होंने कह दिया था कि वह मर जाएँगे, लेकिन पदक नहीं बेचेंगे। अब्बू ने ही बताया था कि पहले के लोग फुटबॉल खेलते थे। बाजार के लोगों ने ही मिलकर जनता क्लब बनाया था। इस क्लब में



दर्जी, दुकानदार आदि खिलाड़ी थे। प्रतिदिन अभ्यास करते-करते सभी अच्छे खिलाड़ी बन गए थे। इस टीम ने अनेक मैच जीते थे और एक दिन जनता क्लब ने प्रदेश स्तर की प्रतियोगिता भी जीत ली थी। उसी में सभी खिलाड़ियों को एक-एक सोने का पदक मिला था। वह पदक आज भी अब्बू को जान से ज्यादा प्यारा है।

जनता क्लब बाद में टूट गया, क्योंकि नए लोगों ने खेल में रुचि नहीं ली। लोग कहने लगे कि यह तो स्कूली लड़कों के खेल हैं। अब्बू बड़े गर्व से बताते हैं कि जब जनता क्लब का मैच होता था तो पूरा शहर ही खेल देखने उमड़ पड़ता था।

अब्दुल की आँखों में आँसू छलछला आए। आज उसके कारण अब्बू अपना पदक बेचने की तैयारी कर रहे हैं, जबकि वह जानता है कि उसके अब्बू इतनी अधिक मेहनत करते हैं। इसी बदौलत उसकी और सलमा की पढ़ाई चल रही है। वह ऐसे

कितने ही सिलाई के कारीगरों को जानता है जिनके घरों में भुखमरी के हालात हो जाते हैं। उसे महसूस हो रहा था कि वह गलत है, उसे जिद नहीं करनी चाहिए। उसने मन-ही-मन एक फैसला कर लिया और पढ़ने लगा।

दूसरे दिन जब अब्दुल नाश्ता करके स्कूल जाने की तैयारी कर रहा था तो अब्बू बोले, “अब्दुल बेटा, स्कूल से तुम दुकान पर चले आना, आज हमलोग कोट का कपड़ा खरीदेंगे।”

“नहीं अब्बू, मेरा स्वेटर तो अभी ठीक है। मैं कोट नहीं लूँगा।” अब्दुल बोला।

“क्यों? कल तो तुम कह रहे थे कि जब तक कोट नहीं मिलेगा, मैं स्कूल नहीं जाऊँगा!” अम्मी आश्चर्य से बोलीं।

“वह तो मैं ऐसे ही कह रहा था। अब मैं भी बड़ा हो गया हूँ।” अब्दुल ने कहा और बस्ता उठाकर स्कूल चल दिया।

अम्मी और अब्बू हैरानी से उसे जाते हुए देखते रहे।

अभिव्यक्ति,

पुलिया कलां-262902 (उ.प्र.)

# How the Camel got his Hump !

Ratna Manucha

The camel was very *tired* indeed. He was tired of playing all day with other animals. He was tired of bowing before the lion because he was the King of the Forest and he was tired of all the greenery around him.

The grass was green, the leaves were green, and even the bushes were a dark, emerald green! The forest was so dense and green, that the camel could hardly see the sky.

“I’m tired of this silly, green colour,” he thought to himself grumpily. He was always so unhappy and discontented that he forgot to notice the beautiful, multicoloured-butterflies, the various designs on the animal’s coats, their lovely texture and the different hues of the wildflowers as they changed colours along with the sun’s position.

“I’m sick, sick, sick!” muttered the camel to himself as he lazily nibbled on a blade of grass. “I’m sick of the same friends, whose faces I see day in and day out. I need a change.”

All the other animals would call him again and again to play with them but the camel kept refusing. They began to wonder what was wrong with the camel.

“I am much better than all other animals. I have a beautiful coat and such big eyes! Look at my thick eyelashes!” Saying so, the camel would preen himself by looking into a pond. He could see his reflection clearly in its still, glassy waters.

One day, the lion decided to organize a big party for all the animals of the forest. The dove was asked to be the messenger and carry the message to all the animals and birds of the forest.

But, when it flew down to the camel, to tell him about the invitation, the camel tossed his head in disdain.

“I don’t mix with ordinary folks like you,” he said scornfully, “I am too superior to be attending such silly parties.”

The big day dawned bright and clear. All the animals woke up early and bathed in the stream so that they would be fresh for the party. It was a wonderful day indeed!

The birds provided the music as they chirped, twittered and warbled merrily. The monkey was the drummer as he beat a stick on the stump of an old tree. The animals were dancing without a care in

the world.

The camel could not bear the loud noise. He stomped angrily to the clearing where the party was being held.

“Stop this noise at once!” he thundered. “I’m getting a terrible headache!”

The animals stopped dancing and looked at the camel in disgust.

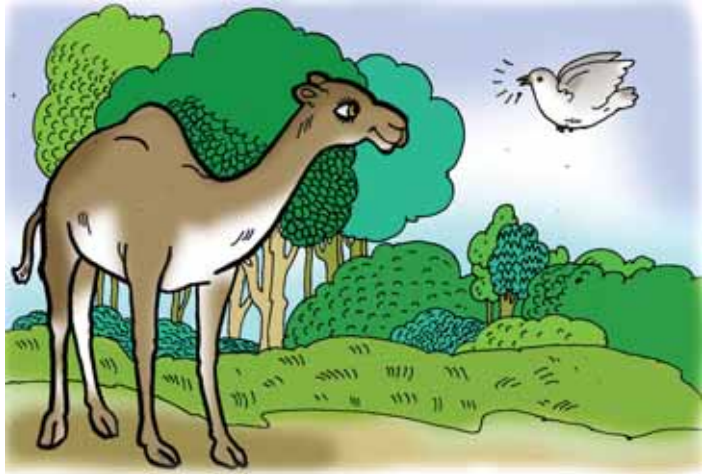
“What a spoilsport!” they mumbled to each other. But the lion could take this no longer. He was fed up of the camel’s behaviour.

“I must do something to teach the camel a lesson,” he thought.

So, he prayed night and day to the Lord of the Jungle to take the camel away from the forest.

The Lord of the Jungle had been noticing the camel’s discontent for a long time and he understood exactly what the other animals were going through.

The next morning, he called the camel and said, “Since you are constantly complaining, I have decided to banish you from my forest. You will be sent to the desert where you will be all alone, as you do not appreciate the company of other animals. Also, since



you are so proud of your looks, I am giving you an ugly *hump* on your back which will forever remind you of how ungrateful you were.”

Saying this, the Lord of the Jungle waved his arms and banished the camel into a desert, far, far away.

This is how, the camel came to live in the desert, all alone. Now, he would not complain about the noise his friends made, because there *were* no friends!

He could not call himself beautiful because he had a big, ugly hump which he carried around on his back all the time, to remind him of his foolishness!

*Little Flower School  
6, Haridwar Road  
Dehradun-248001  
(Uttarakhand)*



# CALEND



January							
Wk	M	T	W	T	F	S	S
1			1	2	3	4	5
2	6	7	8	9	10	11	12
3	13	14	15	16	17	18	19
4	20	21	22	23	24	25	26
5	27	28	29	30	31		

February							
Wk	M	T	W	T	F	S	S
5						1	2
6	3	4	5	6	7	8	9
7	10	11	12	13	14	15	16
8	17	18	19	20	21	22	23
9	24	25	26	27	28		

March							
Wk	M	T	W	T	F	S	S
9						1	2
10	3	4	5	6	7	8	9
11	10	11	12	13	14	15	16
12	17	18	19	20	21	22	23
13	24	25	26	27	28	29	30
14	31						

April							
Wk	M	T	W	T	F	S	S
14		1	2	3	4	5	6
15	7	8	9	10	11	12	13
16	14	15	16	17	18	19	20
17	21	22	23	24	25	26	27
18	28	29	30				

May							
Wk	M	T	W	T	F	S	S
18				1	2	3	4
19	5	6	7	8	9	10	11
20	12	13	14	15	16	17	18
21	19	20	21	22	23	24	25
22	26	27	28	29	30	31	

June							
Wk	M	T	W	T	F	S	S
22							1
23	2	3	4	5	6	7	8
24	9	10	11	12	13	14	15
25	16	17	18	19	20	21	22
26	23	24	25	26	27	28	29
27	30						



# A R 2 0 1 4



July							
Wk	M	T	W	T	F	S	S
27		1	2	3	4	5	6
28	7	8	9	10	11	12	13
29	14	15	16	17	18	19	20
30	21	22	23	24	25	26	27
31	28	29	30	31			

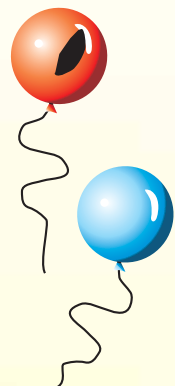
August							
Wk	M	T	W	T	F	S	S
31					1	2	3
32	4	5	6	7	8	9	10
33	11	12	13	14	15	16	17
34	18	19	20	21	22	23	24
35	25	26	27	28	29	30	31

September							
Wk	M	T	W	T	F	S	S
36	1	2	3	4	5	6	7
37	8	9	10	11	12	13	14
38	15	16	17	18	19	20	21
39	22	23	24	25	26	27	28
40	29	30					

October							
Wk	M	T	W	T	F	S	S
40			1	2	3	4	5
41	6	7	8	9	10	11	12
42	13	14	15	16	17	18	19
43	20	21	22	23	24	25	26
44	27	28	29	30	31		

November							
Wk	M	T	W	T	F	S	S
44						1	2
45	3	4	5	6	7	8	9
46	10	11	12	13	14	15	16
47	17	18	19	20	21	22	23
48	24	25	26	27	28	29	30

December							
Wk	M	T	W	T	F	S	S
49	1	2	3	4	5	6	7
50	8	9	10	11	12	13	14
51	15	16	17	18	19	20	21
52	22	23	24	25	26	27	28
1	29	30	31				



# एक अनोखी उपलब्धि

डॉ. बानो सरताज



भारत के पूर्व राष्ट्रपति और वैज्ञानिक डॉ. ए. पी.जे. अब्दुल कलाम अद्भुत प्रतिभा के धनी हैं। उन्हें एटॉमिक मैन, मिसाइल मैन, शलाका मानव आदि नामों से जाना जाता

है। भारत रत्न डॉ. अब्दुल कलाम के नाम अनेकानेक उपलब्धियाँ दर्ज हैं, पर वे स्वयं अपनी चार उपलब्धियों को महत्वपूर्ण मानते हैं। तीन उपलब्धियाँ विज्ञान के क्षेत्र से संबंधित हैं। चौथी उपलब्धि उनका एक ऐसा कारनामा है जिसे अंजाम देकर उन्होंने अपूर्व शांति का अनुभव किया था। विकलांग बच्चों के लिए कुछ करके उन्होंने अपने को धन्य माना था और आज भी मानते हैं।

हुआ यों कि अग्नि मिसाइल पर शोध के दौरान उन्होंने एक नए पदार्थ की खोज की, जिसका भार बहुत कम था। इस पदार्थ को डॉ. कलाम ने 'कार्बन-कार्बन' नाम दिया।

एक दिन निज़ाम इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज़ के अस्थि-रोग विशेषज्ञ उनसे मिलने आए। उन्हें अपनी प्रयोगशाला दिखाते हुए डॉ. कलाम ने उन्हें नए पदार्थ 'कार्बन-कार्बन' की खोज की जानकारी दी। डॉक्टर ने उसे उठाकर देखा और भार में बहुत हलका पाकर दंग रह गए। उस खोज की प्रशंसा करते हुए वह विचारों में खो गए। उनके मस्तिष्क में वे

विकलांग बच्चे घूम गए जो भारी कैलिपर्स खींचने में अत्यधिक पीड़ा सहन करते हैं। उन्होंने कहा, "कृपया आप इस पदार्थ से विकलांग बच्चों को भारी वजन खींचने से मुक्ति दिला दें। उन्हें तीन-तीन किलो वजनी कैलिपर्स खींचने पड़ते हैं जो अत्यंत पीड़ादायक होता है।"

अस्थि-विशेषज्ञ महोदय की विकलांग बच्चों के प्रति संवेदना से डॉ. कलाम द्रवित हो गए। उन्होंने इस संबंध में कुछ करने का वादा किया।

डॉ. कलाम इंस्टीट्यूट जाकर विकलांग बच्चों से मिले। कैलिपर्स की जाँच की और लौटकर काम में जुट गए। तीन महीनों तक इसी काम में लगे रहे। दिन-रात एक कर अंततः केवल तीन सौ ग्राम वजन वाले 'फ्लोर आर्थोसिस कैलिपर्स' तैयार करने में सफल हो गए।

डॉ. कलाम ने अस्थि-रोग विशेषज्ञ को सूचित किया और इंस्टीट्यूट पहुँच गए। प्रयोग द्वारा कैलिपर्स की कार्य-प्रणाली और कार्य-क्षमता देखकर उन विकलांग बच्चों को विश्वास ही नहीं होता था कि अब वे भारी बोझ घसीटने की पीड़ा से मुक्ति पा जाएँगे। इन बच्चों के माता-पिता तो भीगी आँखों से डॉ. कलाम का अभिनंदन करते न थकते थे।

आकाशवाणी के सामने, सिविल लाइंस  
चंद्रपुर (महाराष्ट्र)

# कैलेंडर की आत्मकथा

गोपाल जी गुप्त

31 दिसंबर की रात को दूरदर्शन के विभिन्न चैनलों पर नए साल का रंगारंग कार्यक्रम देखकर जब निखिल बिस्तर पर लेटा तब उसकी नजर दीवाल पर टँगे कैलेंडर पर पड़ी और यह सोचकर कि कल सुबह वह वहाँ नया वाला कैलेंडर टाँग देगा वह अपनी आँखें बंद कर सोने की कोशिश करने लगा। नींद आते ही उसने एक अनूठा सपना देखा... उसे लगा, दीवाल पर टँगा कैलेंडर इनसानी रूप धारण कर सामने खड़ा हो गया और उसे नए साल की बधाई देते हुए कुछ कहने लगा...

“निखिल, सोने के पहले तुमने तय कर लिया कि तुम कल मेरे स्थान पर नया कैलेंडर टाँगोगे? सच है मैं अब बेकार हो गया हूँ और मुझे यहाँ से हटाते हुए तुम यह भूल जाओगे कि मैंने तुम्हारे साथ इसी कमरे में पूरे 365 दिन बिताए हैं, पर मैं तुम्हें नहीं भूल पाऊँगा। मैंने इन बारह महीनों में तुम्हारे साथ होली की मस्ती भी देखी, गरमी



की तपिश भी, बरसात की पनियाली बौछारें भी झेली हैं, सरदी की कड़कड़ाती शीत की भी अनुभूति की है। खैर... परिवर्तन तो प्रकृति का नियम है। जो आया है वह जाएगा भी, पर... जाने से पहले मैं तुम्हें अपनी आत्मकथा सुनाना चाहता हूँ, क्योंकि तुम नहीं जानते कि मुझे आज के इस रूप तक पहुँचने के लिए कितनी बार काटा-छाँटा गया, कितनी-कितनी बार मेरी उम्र घटाई-बढ़ाई गई, कितनी बार मेरा नाम बदला गया...

“लगभग 3000 साल पहले रोम में मेरा जन्म हुआ। उस समय मेरी उम्र दस महीनों में बँटी 304 दिनों की थी। तब मार्च साल का पहला महीना तथा दिसंबर अंतिम यानी दसवाँ महीना होता था। ईसा-पूर्व 700 में रोम के पोम्पिलियस ने साल के शुरू में दो महीने जेनुरियस तथा फेबुरियस जोड़े, जो देवी जैनुस तथा फेरुआ के नाम पर रखे गए थे तथा दिनों की संख्या हुई 360। रोम के शासक जूलियस सीजर (102-44 ईसा-पूर्व) के 48 ईसा-पूर्व में राज्यारोहण तक अनेक शासक मेरी उम्र मनमाने ढंग से घटाते-बढ़ाते रहे, जिससे मेरी एकरूपता तथा गणना काफी गड़बड़ा चुकी थी। तब तक मैं रोमन कैलेंडर के नाम से जाना जाता था।

ईसा-पूर्व चौथी शताब्दी में मिस्त्र के ज्योतिषियों ने जान लिया था कि पृथ्वी द्वारा सूर्य की परिक्रमा पूरी करने में  $365\frac{1}{4}$  दिन लगते हैं। अतः उन्होंने 365 दिनों वाले वर्ष का सौर पंचांग बना लिया था। मिस्त्री शासक

तेलोनी-तृतीय चाहते थे कि शेष बचे  $\frac{1}{4}$  दिन की त्रुटि भी ठीक की जाए, किंतु पुरोहितों के विरोध के कारण वह इसे ठीक नहीं कर सके। ईसा-पूर्व 48 में जूलियस सीजर ने यूनानी खगोलशास्त्री सोसीजिनास के सहयोग से मिस्त्री ज्योतिषियों द्वारा बनाए 365 दिवसीय पंचांग को ध्यान में रखते हुए 46 ईसा-पूर्व में एक संशोधित जूलियन कैलेंडर बनाया तथा  $\frac{1}{4}$  दिन की त्रुटि को ठीक करने के उद्देश्य से चौथे वर्ष में एक दिन बढ़ाने का निर्देश दिया। इसी के साथ तब तक हो चुकी त्रुटि ठीक करने हेतु राजाज्ञा प्रसारित की कि उस साल (ईसा-पूर्व 46) में कुल 445 दिनों का साल होगा, तदंतर 365 दिनों का, और प्रत्येक चौथे साल 366 दिनों का होगा।

“16वीं शताब्दी ईस्वी में रोम के तेरहवें पोप ग्रेगरी (1502-1585) ने उस समय प्रचलित जूलियन कैलेंडर में भी त्रुटि पाई। उन्होंने जाना कि पृथ्वी सूर्य का एक चक्कर 365.2422 दिनों (365 दिन 5 घंटे 48 मिनट 45.41 सेकेंड) में पूर्ण करती है, न कि 365.2500 दिनों में। इस तरह जूलियन कैलेंडर में भी कुछ अधिक समय जोड़ा जा रहा है। उन्होंने यहूदी खगोलशास्त्री क्रिस्टोफर क्लेवियस के सहयोग से नया संशोधित ग्रेगेरियन कैलेंडर तैयार किया तथा इसमें 21 मार्च, 1582 को पड़ने वाले वर्नल इक्वीनॉक्स को आधार बनाकर, ईसा की जन्म-तिथि को 1 जनवरी, 01 मानते हुए, पिछले 1581 वर्षों की त्रुटि को ठीक किया और पाया कि

4 अक्टूबर, 1582 तक कुल दस दिन अधिक जुड़ चुके थे। अतः उन्होंने 1582 के कैलेंडर से दस दिन पूरी तरह गायब करके शुद्ध किया। इस तरह 4 अक्टूबर, 1582 के अगले दिन को 15 अक्टूबर, 1582 कर दिया गया। विश्व इतिहास में ऐसा पहली बार हुआ... है न आश्चर्य की बात?

“ग्रेगरी ने लीप ईयर के लिए भी नियम निर्धारित किए। उन्होंने कहा कि जो साधारण सन् 4 से पूरी तरह बँट जाएँगे उस साल फरवरी 29 दिनों का होगा और साल 366 दिनों का, परंतु यह नियम शताब्दी वर्ष पर लागू नहीं होंगे। वही शताब्दी वर्ष ‘लीप ईयर’ होगा जो 400 से विभक्त होगा। अतः 1600 लीप ईयर हुआ, तदंतर 1700, 1800, 1900 नहीं, बल्कि 2000 लीप ईयर हुआ। यह व्यवस्था कैलेंडर के शुद्ध होने के लिए की गई। आधुनिक खगोलशास्त्रियों ने पाया कि अब भी कुछ त्रुटियाँ चल रही हैं और सन् 3923 में लगभग एक दिन की वृद्धि हो चुकी होगी। अतः सन् 4000 से वे सभी सहस्राब्दी वर्ष जो 4000 से पूरी तरह विभक्त हो जाएँगे वे लीप ईयर नहीं होंगे। पर यह नियम सामान्य सालों तथा शताब्दी सालों पर प्रभावी नहीं होंगे, वे पहले की ही तरह चलते रहेंगे। निखिल, तुम्हें यह जानकर आश्चर्य होगा कि इंग्लैंड ने सन् 1751 तक ग्रेगोरियन कैलेंडर को नहीं अपनाया था और वहाँ इसे 1752 से अपनाया गया।

अब मेरे मासिक नामों के बारे में भी

December 2014						
Su	Mo	Tu	We	Th	Fr	Sa
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30	31			

जान लो—जनवरी, फरवरी तो बता चुका हूँ मार्च मार्स ग्रह के नाम पर, एप्रैलिस के नाम पर अप्रैल, देवी माईया तथा देवजननी जूना के नाम पर मई, जून, जूलियस सीजर के नाम पर जुलाई, ऑगस्टस सीजर के नाम पर अगस्त, रोमन अंक सेप्ट, ऑक्टो, नेविम एवं डेसेम के आधार पर सितंबर, अक्टूबर, नवंबर तथा दिसंबर नाम रखा गया।

“खैर... निखिल, अब सुबह हो रही है, मुझे अब विदा दो। मैं जा रहा हूँ। मेरी यही कामना है कि उषा का स्वर्णिम प्रभात तुम्हारे जीवन को खुशियों से भर दे! अच्छा, मेरे नन्हे दोस्त, अलविदा...!”

चिड़ियों की चहचहाहटों से निखिल की नींद खुल गई। उसे खुशी हुई कि उसे जो कैलेंडर से जानकारी मिली वह उसके लिए अभूतपूर्व है।

‘प्रेमगँगन’, एम.आई.जी. 292  
कैलास विहार, आवास विकास योजना  
कल्याणपुर, कानपुर-208017 (उ.प्र.)

# Stomping Ground of Birds and Bird Lovers

Neera Jain

About two hundred kilometers from Delhi, some thirty minutes after you cross Mathura, you reach Bharatpur which is famous for its bird sanctuary. Although most people still know it as Bharatpur Bird Sanctuary, its proper name is *Keoladeo National Park*. Keoladeo refers to Lord Shiva and the park gets its name from the ancient Keoladeo temple in it.

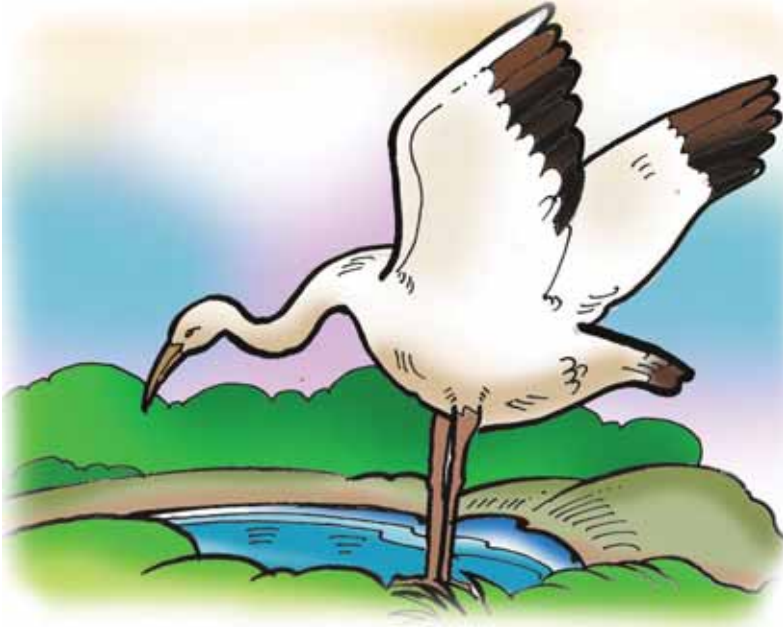
The 29 sq km park is like an oasis in a desert and teems with birds from far and near. Before you enter it, you would never imagine that – in it live more than

two hundred and fifty species of birds! Bird-watchers come from all over the world to see the large variety of birds that either live here or visit it in the winter.

We went to the sanctuary in late August and found it a paradise for nature-lovers. Grasslands, wetlands and a variety of trees and bushes make you forget that dusty, crowded roads and noisy traffic are not too far away. Here, there are pathways running through quiet forests and on these narrow pathways you can sit in a tonga and go bird-watching.

As our pony trotted down the pathway that was lined with trees and bushes on both sides, we saw nothing but lots of greenery at first. Then suddenly, the tongawalla pulled the pony's rein and the animal immediately stood still.

Our tongawalla, Raju, pointed at a tree close by. On the top



of a branch sat a bird. The guide passed us his binoculars and immediately the bird was clearly visible. It was a blue jay or the Nilkanth. Just then it flew away and we saw a flash of bright blue feathers. How often had I searched for Nilkanth feathers as a child! The blue feathers seemed absolutely magical and I used to carefully preserve them in my books.

Another blue bird was sitting on a bough overhanging a lake. It had a long beak and orange underside and was patiently waiting for the right moment to dive in. I was reminded of fishermen who sit for hours with their bait dangling in water. The kingfisher also knows when to be quiet and when to dive in with lightning speed.

Then as we moved further down the path, a hare darted across the road. Its amazingly long ears looked like upright cricket bats. We tried to follow its movement but it was gone in a wink and had hid somewhere.

As we strained our eyes in the distance, something else became visible, a full-grown deer. By and by, more shapes became visible. There were three or four deer grazing in the woods. “Sambhar” whispered our guide. It was the first time that we had seen deer in the open and not in an enclosure. Seemed so right and natural!

Crow pheasants, peacocks, babblers, herons and egrets were so plentiful in the park that we soon stopped exclaiming when we saw one.

I got excited when I saw a koel. This elusive bird has often tantalized me. I hear it singing its summer song in the park near my house and I run from tree to tree to find it but somehow I am never able to find it.

Here at last was a koel in full view!

“Are you sure this is a koel?” I asked the guide again and again. “Yes, yes it is.” The crow-sized black bird had crimson eyes and a slightly curved beak. Just then it called out and there it was, the unmistakable cry—*kuuuuooooo!*

Another bird flew from a branch and joined the black koel. It was brownish and spotted white. The guide told us that that was the female. She does not sing as beautifully as the male; her song is just—*kik-kik-kik!*

We also learnt that the koel belongs to the cuckoo family and like other cuckoos puts its eggs in the nests of other birds. When the koel egg hatches, the fledgling often pushes out the eggs of the host from the nest. It wants that the hosts should feed only him.

Our most exciting sighting was the huge flock of grayish-white birds that sat on tops of trees in a distance. These

were migratory geese who had come from some far-off country and were preparing to nest in the sanctuary.

Through our binoculars we could see that there was a great flurry of activity in the goose world. They were busy building nests in which they could lay their eggs and raise their young. In December, they would become even busier and that is when tourists would flock to the sanctuary to see them.

Keoladeo is famous for the large number of migratory water-fowl that visit it. Some use the park as a stopover to rest before they continue their onward journey while others stay and breed in the park.

The most famous of all the visitors is the endangered *Siberian Crane*.

Once upon a time, this grand bird was seen all over the Gangetic plain in winter but extensive hunting has put an end to that.

Bharatpur is the only place where the Siberian Cranes winter in India. They come all the way from Russia, stop in Afghanistan and then spend the winter in Bharatpur. The journey is nearly 5,000 kms.

It is amazing how they always know what route to take and where to stop. Why do they come to Bharatpur? Mainly they come, because it falls on their

route; and also because the park is protected and offers them the right kind of habitat.

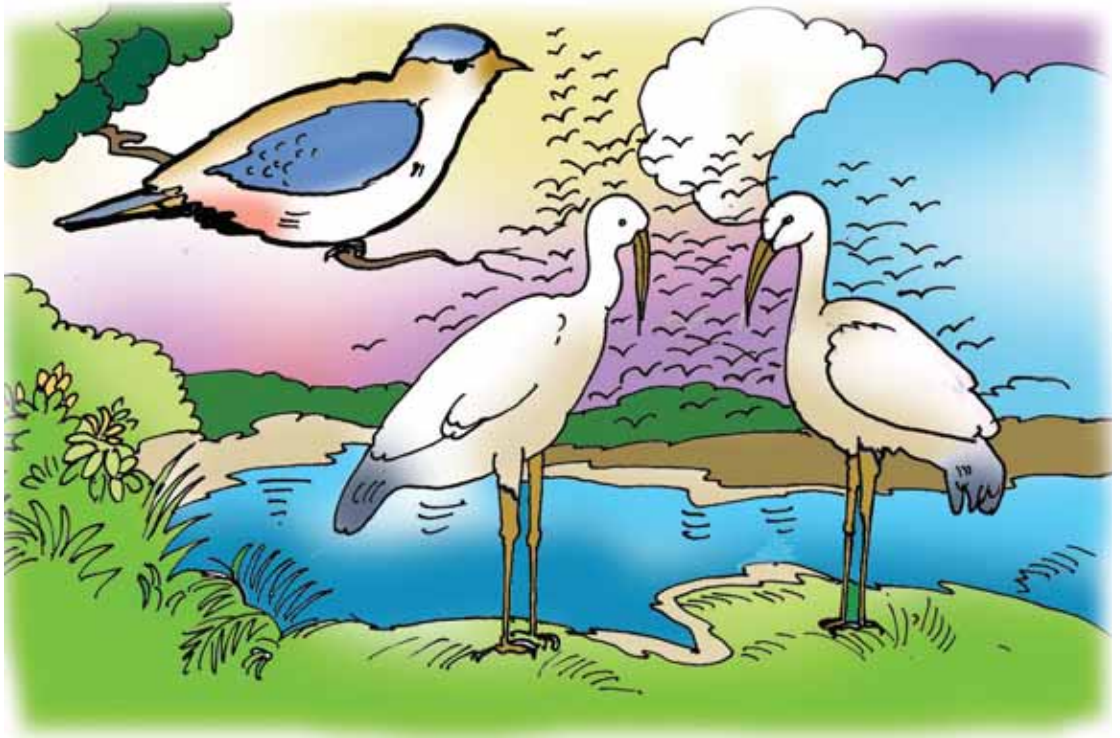
Keoladeo is home to so many birds because it offers them food and water in a safe place. How Keoladeo became a haven for birds is also an interesting story!

In the beginning, there was a forest here which must have been quite dense for the local people called it 'ghana'. This forest lay close to the confluence of two rivers— Gambhir and Banganga. Maharaja Suraj Mal got a dam built here in 1760 and it became possible to flood the low-lying area with water in a controlled way.

Once Maharaja Ram Singh of Bharatpur happened to visit England, he saw the duck-shooting preserves there and thought that he too could develop Bharatpur as a duck-shooting area.

On returning home, he set about his project and created a marshy area where ducks could breed. This became a popular hunting ground for the royalty and at times they obliged their English guests by inviting them to the hunts.

As time went by, people began to understand that instead of killing birds we should protect them. In 1982, the sanctuary was declared a National Park and a few years later it also got the status



of a World Heritage site. Now hunting and grazing are banned in this area.

If you look at the area of Bharatpur you will see that it is quite dry. The trees are of the kind that grow in semi-arid areas. How is the Bharatpur sanctuary so green and water soaked then?

The Ajan Bund (dam) that was created by Maharaja Suraj Mal makes it possible to flood the park with water from time to time. Thus, artificial marshes are created here and fish are allowed to breed in them. The marshes also encourage insects to breed and thus the birds are assured of good meals. No

wonder water-fowl like this sanctuary!

Well whatever may be the technology behind Keoladeo Ghana National Park, the fact is that when you see cranes dancing their courtship dance, kingfishers diving for fish, mongoose streaking across the paths and geese cackling away, you feel that this is one place that must never be disturbed. And you promise to yourself to come in December when the birds are most plentiful.

*neerajain@gmail.com*

# बड़ी बनूँ कुछ मैं भी

दिविक रमेश

तितली नहीं बैठ सकती क्या  
एक जगह तू टिककर?  
उड़ ना सकती क्या तू तितली  
एक जगह से छिककर?

मैं भी तो ऐसी ही हूँ ना  
घूम-घूमकर खाती।  
माँ कहती है एक जगह मैं  
अरे, नहीं टिक पाती

पर क्या तितली, कभी गले में  
खाना नहीं अटकता?  
कभी इधर, फिर कभी उधर जा  
मन क्या नहीं भटकता?

मेरे तो, मैं सच कहती हूँ  
खाना गले अटकता।  
चंचल हो जब पुस्तक पढ़ती  
मन भी खूब भटकता

अब तो सोचूँ, टीचर जी की  
बात मान लूँ मैं भी  
टिककर बैठूँ, टिककर पढ़ लूँ  
बड़ी बनूँ कुछ मैं भी।



बी-295, सेक्टर 20, नोएडा  
(उत्तर प्रदेश)

# Interesting Facts about January

Surekha Sachdeva

January is the first month of the year in the Julian and Gregorian calendars. It is named after 'Janus', the Roman god of the doorway. Being the first month of the calendar year, it brings new opportunities, joy and happiness to the people across the world. It is an eventful month in the history of the world, especially India, because in this month, the Constitution of India came into force, India became Republic and many other important historical events took place. Not only this, numerous Indian personalities were also born in this month.

## 1 January

- 1862: The Indian Penal Code came into effect
- 1877: Queen Victoria was proclaimed Empress of India
- 1973: Field Marshal Sam Hormusji Framji Jamshedji Manekshaw, popularly known as Sam Bahadur was appointed Field Marshal. He is the first of only two Indian military officers to hold the highest rank of Field Marshal of the Indian Army. The other was Field Marshal K M Cariappa. Under his command,

Indian forces achieved success in the war against Pakistan in 1971.

## 11 January

- 1966: Death of Shri Lal Bahadur Shastri, the second Prime Minister of India in Tashkent, Russia (now in Uzbekistan).

## 12 January

- 1863: Swami Vivekananda was born in Kolkata. He addressed the World's Parliament of Religions held in Chicago in September 1893 and founded Ramakrishna Mission in 1897. In the year 1984, Government of India decided to observe the birthday of Swami Vivekanand as National Youth Day every year.

## 14 January

- 1761: The Third Battle of Panipat (Haryana) was fought between the Maratha army led by Baji Rao and Afghan army of Ahmad Shah Abdali.

## 15 January

- 1949: General (later Field Marshal) K M Cariappa was appointed as the first Indian Commander-in-Chief of



Indian Army. He succeeded General Roy Butcher of British Army.

- Celebrated as Army Day in India. The Chief of the Army Staff takes the salute at the Army Day Parade in the Delhi Cantonment.

### 16 January

- 1761 : In the Battle of Wandiwash, the British defeated French and restricted them to Pondichery. This battle helped British establish their supremacy in India.

### 18 January

- 1842: Mahadev Govind Ranade, a noted historian, social reformist in the field of child marriage, widow remarriage, and women's rights and

a judge of the High Court of Bombay was born in Nashik, Maharashtra.

### 19 January

- 1966 : Indira Gandhi was elected prime minister of India. She was India's first woman to head government.

### 23 January

- 1897: Netaji Subhash Chandra Bose, the founder of Indian National Army (INA) was born in Cuttack, Odisha.

### 24 January

- 1855: Sarjoo Coomar Goodeve Chauckerbutty was the first Indian to enter the Indian Medical Service as Assistant Surgeon.

- 1950: Dr Rajendra Prasad was elected as the first President of India by the Constituent Assembly.
- 1950: The song 'Jana Gana Mana', composed originally in Bengali by Gurudev Rabindranath Tagore, was adopted in its Hindi version by the Constituent Assembly as the National Anthem of India.

### 26 January

- 1930: Congress gave a call for Purna Swaraj and Independence Day was observed all over the country.
- 1950: Constitution of India came into force.
- 2002: The Indian flag code was modified and after several years of independence, the citizens of India were finally allowed to hoist the Indian flag over their homes, offices and factories on any day and not just national days as was the case earlier. Now Indians can proudly display the national flag any where and any time, as long as the provisions of the Flag Code are strictly followed to avoid any disrespect to the tricolour.
- Republic Day of India is celebrated across the country. To honour the occasion, a grand celebration is held at New Delhi, the national capital. The different regiments of Army,

Navy and Air Force march in-synchrony from Rashtrapati Bhavan, along the Rajpath and reach the India Gate saluting the President of India, who is also the Commander-in-Chief of the Indian Armed Forces.

### 27 January

- 1963: The patriotic song 'Ai mere watan ke logon' was sung for the first time by Lata Mangeshkar. Written by renowned poet Pradeep, the song completed 50 years in 2013.

### 28 January

- 1950: Supreme Court of India, the highest court of justice of the country came into being.

### 30 January

- 1948: Mahatma Gandhi, leader of the Indian independence movement, was assassinated. It is observed as Martyr's Day in India. A two-minute silence in the memory of Gandhiji and other martyrs is observed throughout the country at 11.00 am.

### 31 January

- 1923: Major Somnath Sharma, the first person to receive the Param Vir Chakra, the highest War Time Gallantry Award in India, was born in Himachal Pradesh.

*surekha\_sachdeva@rediffmail.com*

## नया सवेरा

जयश्री नायक  
प्रीति रानी भट्टाचार्य

बहुत साल पहले एक जंगल में परीलोक की शिखा परी जंगल की सैर करने आई थी। उसने देखा कि जंगल का राजा शेर भूख से ज्यादा मौज-मस्ती के लिए एक ही दिन में 10-15 जानवरों को मार डालता था। यह सब देखकर शिखा परी दुखी होकर परीलोक लौट गई।

शिखा परी ने सारी बात अपनी दो सहेलियों, स्वीटी और सीमा परी को बताया।

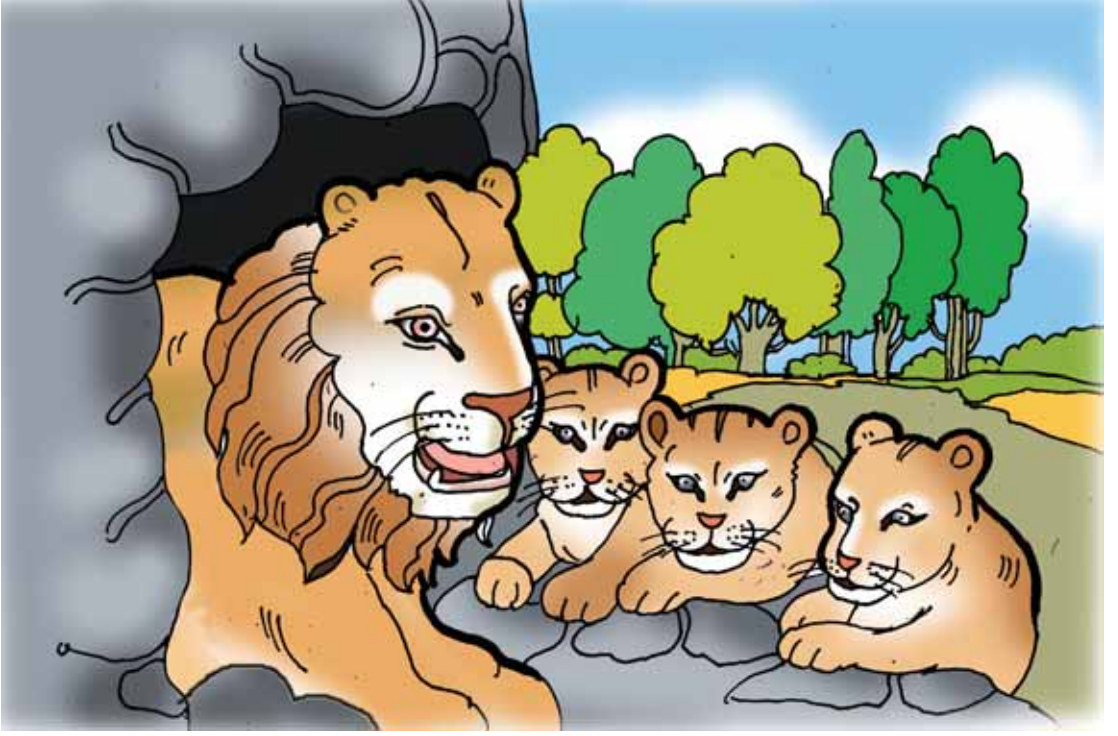
फिर उन तीनों ने मिलकर सोचा, वे जंगल जाकर उस खूंखार शेर को समझाएँगी।

सभी परियाँ जंगल में पहुँच गईं और शेर की गुफा तलाशने में जुट गईं। ये परी सहेलियाँ अलग-अलग दिशाओं में निकल पड़ीं। स्वीटी परी सबसे पहले भालू जी को मिली और उनसे शेर का गुफा पूछा। भालू ने शेर का पता बता दिया। फिर स्वीटी परी ने शिखा परी को बताया। फिर सभी परियाँ जंगल के अन्य जानवरों से मिलकर सोचने लगीं कि शेर जी से कैसे मिला जाए।

काफी सोच-विचारकर परियाँ शेर जी के पास मिलने गईं। शेर जी को 'सभी परियाँ उनके मेहमान हैं' यह कहकर मिलवाया गया। लेकिन शेर को ये सभी परियाँ छोटे-छोटे शेर ही दिख रही थीं।

आखिर ऐसा क्यों? क्योंकि शिखा परी ने शेर के ऊपर जादू कर दिया था। यह बात किसी को भी पता नहीं था। अगर यह बात उन परियों को पता होती तो उन्हें बुरा लगता। क्योंकि इतनी सुंदर दिखने वाली परी शेर दिख रही थीं।





जंगल में परियों ने बहुत दिन रहकर शेर को पूरा-पूरी बदल दिया था। अब जितना भूख होता था शेर उतना ही खाता था और बेकार में किसी भी जानवर को नहीं मारता था।

एक दिन शिखा परी के जादू का असर समाप्त होने वाला था। शेर ने उस दिन एक शिकार करके ऊपर देखा तो उसे सामने तीन सुंदर-सुंदर परियाँ दिखाई दीं। वह हैरान था कि उसे यह क्या हो गया है!

शेर की उलझन को शिखा परी समझ गई और हिम्मत करके उसने शेर को सारी सच्चाई बता दी। उनके पवित्र मन के बारे में

सुनकर शेर बहुत प्रसन्न हुआ। वह यह जानकर भी प्रसन्न हुआ कि लोग खूँखार जानवर से भी प्यार करते हैं। उस दिन से शेर का मन बदल गया और उसने सबसे प्यार से बात की।

फिर परियों ने अपने घर लौटने की बात कही। सभी जानवरों ने उनको फिर से जंगल आने के लिए निवेदन किया। और परियाँ परीलोक चली गईं। शेर को समझ आ गया कि जरूरत के अनुसार ही किसी चीज की इच्छा रखनी चाहिए।

किरीबुरु उच्च विद्यालय (हिल टॉप)  
क्योंझर-758040 (ओड़िशा)

## कौन-सा वार था, किस तारीख को?

आइवर यूशिएल

बहुत मुश्किल होती है जब किसी खास मौके की बात करते हुए तारीख तो याद आ जाती है, पर दिन कौन-सा था यह याद नहीं आता। बात कई वर्ष पुरानी हो तो यह और भी टेढ़ी हो जाती है, पर भई चिंता की कोई बात नहीं। जब हमसे दोस्ती की है तुमने तो तुम्हारी ऐसी चिंताएँ दूर करना ही हो हमारा काम है।

यहाँ तीन चार्ट दिए जा रहे हैं और साथ में हाजिर है एक उदाहरण। बस, इसे समझकर चार्टों को अपने पास रख लो और फिर किसी भी सन् की किसी भी तारीख का दिन पता कर लो। तो लो, उदाहरण देखो—

मान लो, तुम्हें पता करना है कि 31 मई, 1989 को कौन-सा दिन था?

इसके लिए सन् के दाहिनी ओर वाले पहले दो अंक ले लो—89। इस संख्या को चौथाई करो— $89/4 = 22\frac{1}{4}$

(यह याद रखना कि भाग देने पर संख्या हमेशा पूरी लेनी है, बटे या दशमलव में नहीं।)

अब चार्ट 'क' में महीनों के आगे लिखे अंकों में से मई के आगे का अंक इस संख्या में जोड़ो— $22 + 2 = 24$

इसमें दिन जोड़ो— $24 + 31 = 55$

अब 'ख' से वर्ष वाले अंक जोड़ो—

$55 + 0 = 55$ ; कुल योग =  $55 + 89 = 144$ ; इस संख्या में 7 का भाग देने पर संख्या बचती है 4। इस 4 को चार्ट 'ग' में देखने पर पता चल जाएगा कि 31 मई, 1989 को बुधवार का दिन था।

### चार्ट 'क' (माह)

जनवरी 1 (यदि लीप वर्ष हो तो 0), फरवरी 4 (यदि लीप वर्ष हो तो 3), मार्च 4, अप्रैल 0, मई 2, जून 5, जुलाई 0, अगस्त 3, सितंबर 6, अक्टूबर 1, नवंबर 4, दिसंबर 6।

### चार्ट 'ख' (वर्ष)

190 से 2000 तक—0  
1800 से 1900 तक—2  
(14.9) 1752 से 180 तक—4  
1700 से (2.9) 1752 तक—1  
1600 से 1700 तक—2  
अब जितनी शताब्दियाँ पीछे जाओ एक अंक प्रति शताब्दी जोड़ो।

### चार्ट 'ग' (सप्ताह)

रवि 1, सोम 2, मंगल 3, बुध 4, बृहस्पति 5, शुक्र 6, शनि 0

सी-203, कृष्णा काउण्टी  
रामपुर नैनीताल, मिनी बाईपास  
बरेली-243122 (उ.प्र.)

## Book Review

### Chika-Chik-Chik !

Shanti, a small girl who has been hospitalized and is sick of being sick! When her friend Raj gives her a kaleidoscope, her life changes. Every time she views herself in the kaleidoscope something goes wrong. The right thing that happens is that she recovers fast.

Jeyanthi Manokaran writes and illustrates for children. Based in Bangalore, she is a versatile artist and works in different genres and illustration styles. She has also been awarded UNESCO award for illustrating.



### Chika-Chik-Chik !

*Jeyanthi Manokaran*

National Book Trust, India

₹ 30.00

### Moin and the Monster

One night, Moin encounters a monster. He has to learn to live with the monster who likes to eat bananas, sing silly songs and try out new hairstyles. But Moin finds it hard to keep monster a secret from his parents and teachers and decides to send monster back where it came from.

The author of the book has written over twenty books for children, many of which have received international awards. The book has been illustrated by Anitha Balachandran, an award winning animation film-maker.



### Moin and the Monster

*Anushka Ravishankar*

Duckbill Books

₹ 160.00



# नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला

15 से 23 फरवरी, 2014

प्रगति मैदान, नई दिल्ली

सम्मानित अतिथि देश : **पोलैंड**

थीम : बाल साहित्य

## विशिष्ट आकर्षण

- ❖ ई-बुक्स एवं ई-जोन
- ❖ सीईओ स्पीक
- ❖ लेखक मंच
- ❖ सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ
- ❖ नई दिल्ली प्रतिलिप्याधिकार मंच

[www.newdelhiworldbookfair.gov.in](http://www.newdelhiworldbookfair.gov.in)